छन्द रचना

आचार्य श्री विभवसागर

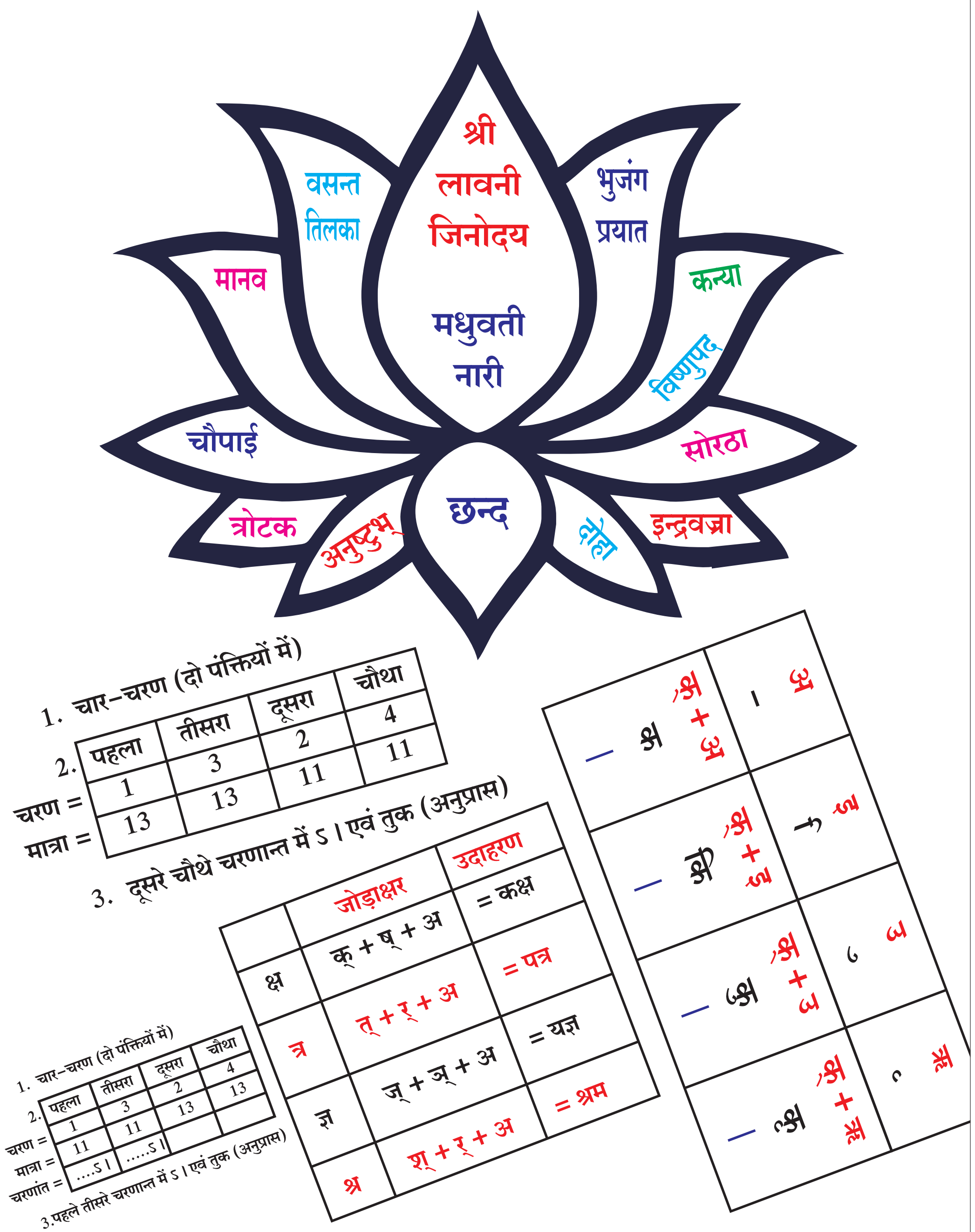

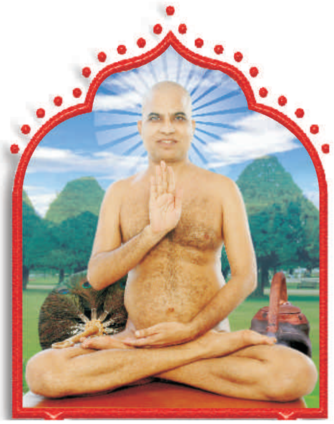

प.पू. गणाचार्य 108
श्री विरागसागर जी महाराज

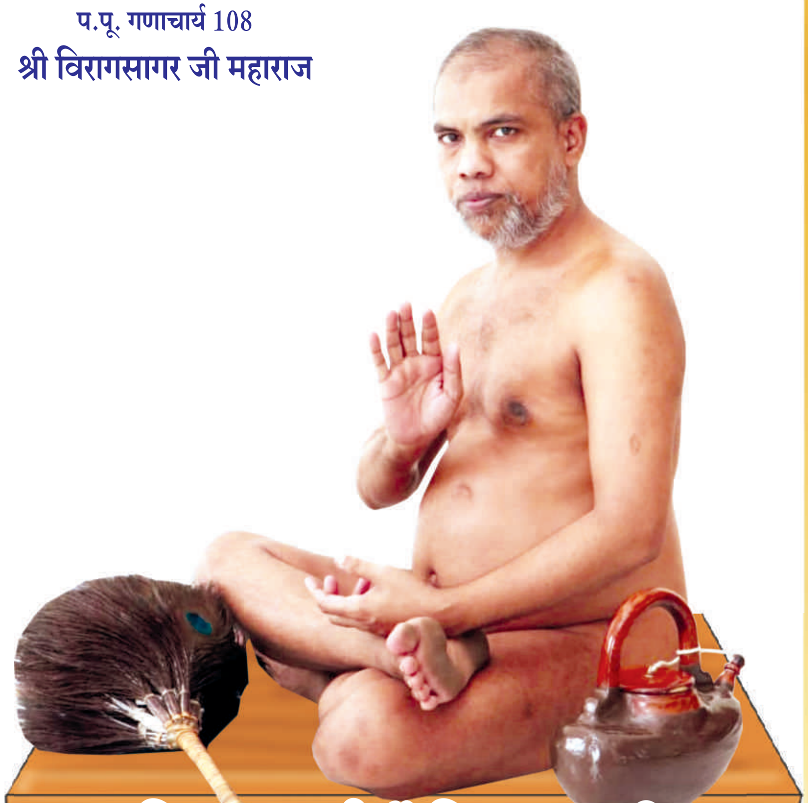

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर जी महाराज

छन्द रचना

आचार्य श्री विभवसागर

कृति	: **छन्द रचना**
शुभाशीष	: प.पू. गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
कृतिकार	: सारस्वत कवि श्रमणाचार्य 108 श्री विभवसागर मुनि
सारिणी	: श्रमण शुद्धात्मसागर
लिपि	: श्रमण शुद्धोपयोगसागर
संस्करण	: प्रथम
प्रकाशन वर्ष	: 2021, वर्षायोग मुंगाणा (राज.)
प्रकाशक	: श्रमण श्रुत सेवा संस्थान, जयपुर-इन्दौर
मूल्य	: स्वाध्याय
प्राप्ति	: सौरभ जैन, जयपुर सम्पर्क-9829178749 टी.के. वेद, इन्दौर सम्पर्क-9425154777 प्रतिपाल टोंग्या, इन्दौर सम्पर्क-9302106984
मुद्रक	: ज्योति ग्राफिक्स, जयपुर मो. 8290526049

छन्द रचना

आ. विभव सागर

छन्द शब्द संस्कृत भाषा में छन्द् धातु से उत्पन्न हुआ है। यह चुरादिगण की उभयपदी धातु है। इसका अर्थ- प्रसन्न करना अथवा सन्तुष्ट करना है। छन्द शब्द का अन्य अर्थ कामना, इच्छा, अभिलाषा, कल्पना, या चाह करना भी है। वस्तुतः छन्द रचना रचनाकाल में रचयिता को तथा पठन-पाठन, श्रवण काल में सहृदय पाठकों, काव्य रसिकों को प्रसन्नता से भर देती है। अतः इसे पावन रचना माना जाता है।

प्रस्तुत "छन्द रचना" कृति सदा भव्य जन आनंददायिनी, गुरुजन प्रियकारिणी, तथा छात्र हितकारिणी उपयोगी पुस्तिका है। छन्द अध्येता इस पुस्तक से उपयोगी, निष्पाप, निष्कषाय छन्द रचना सीखकर निष्प्रमाद हो स्वपर हितकारी साहित्य रचें। इस पवित्र उद्देश्य की संपूर्ति हेतु यह 'छन्द रचना" कृति है।

□

प्रस्तावना -

सारस्वत कवि
आचार्य विभव सागर

प्रस्तुत "छन्द रचना" मौलिक कृति में
काव्य, कविता लेखन कला, रचना कला सीखने वालों
तथा सिखाने वालों को ध्यान में रखकर काव्य रचना
शैली अपनायी गयी। इसे अत्यंत सरल - सहज, सुगम
बोधगम्य बनाने के लिए प्राथमिक स्तर से प्रारम्भ
किया। एवं प्रतिदिन उपयोग में आने वाले काव्यों का
छन्द उदाहरणों में प्रयोग किया है। तथा प्राचीन भाषा
कवियों की कविताओं को मैंने बड़े आदरभाव के साथ
समाविष्ट किया। यह प्रयोग छात्रवर्ग एवं अध्यापक वर्ग
को समुचित सरलता एवं सुविधा देता है।

इस लघु कृति में छन्द रचना के अनिवार्य
अंगों एवं नियमों का ज्ञान कराने के लिए पहले पाठ में
मात्रा ज्ञान, लघुमात्रा, दीर्घमात्रा, तथा व्यन्जन वर्ण, संयुक्त
अक्षर (जोड़ाक्षर), द्वित्व व्यन्जन का बोध कराते हुए
मात्रा बोधक गणना चक्र भी सारिणी में दर्शाया हैं।

दूसरे पाठ में मात्रिक छन्दों का क्रमशः
आरम्भ हुआ। जिन छन्दों की रचना में मात्र मात्राएँ
गिनी जाती हैं, वे मात्रिक छन्द कहलाते हैं।
यहाँ जो छन्द बताये गये हैं - वे सभी छन्द हिन्दी,
संस्कृत, मराठी, गुजराती प्राकृत एवं कन्नड
आदि भाषाओं में काव्य रचने में सहायक हैं।

छन्द रचना में यहाँ पर सर्वप्रथम चौदह मात्रा वाले
मानव छन्द का प्रयोग है। इस छन्द में विविध उदाहरण भी
दिए जो स्वरचित तथा अन्य कवियों द्वारा रचित भी हैं।

तीसरे पाठ में सौलह मात्रा वाले चौपाई
छन्द रचना की कला सिखायी है। चौथा पाठ में अर्द्धसम
मात्रिक दोहा छन्द रचना विधि बतायी है। पाचवाँ पाठ में
सोरठा छन्द रचने की सरलतम विधि सिखायी है। छठवाँ
पाठ में छब्बीस मात्रा वाले विष्णुपद छन्द का कौशल सिखाया।
सातवाँ पाठ से वार्णिक छन्द प्रारम्भ किए। जो वर्णों की
संख्या तथा क्रम पर आधारित प्राचीन पद्धति अनुसार है।
इनमें गण प्रयोग सिखाया है। यदि इस गण क्रम से रचना
की जाये तो पठन - पाठन काल में लय, तर्ज स्वत: बन जाती है।
सर्वप्रथम एक वर्ण वाले 'श्री' छन्द की रचना दर्शायी।
पश्चात् दो वर्ण वाले 'नारी' छन्द, चार वर्ण वाले
कन्या छन्द, छह वर्ण वाले शशिवदना, तथा सात वर्ण
वाले मधुवती छन्द रचना की कला सिखायी।

आठवाँ पाठ में श्लोक रचना हेतु
आठ वर्ण वाले अनुष्टुभ् छन्द रचना करना सिखाया।
गणितीय पद्धति का प्रयोग कर इसे सरल करके दिखाया।
नौवा पाठ में लावनी अर्थात् जिनोदय आदि तीस
मात्रा वाले छन्द रचना की कला है। ये छन्द पढ़ने में बड़े
मधुर लगते और लिखने में बहुत आसान। अत: आप
इसका प्रयोग अधिक से अधिक कर सकते हैं।

दसवाँ पाठ में चौदह वर्ण वाले वसन्ततिलका छन्द में काव्य रचना करना सिखाया। शान्तरस, भक्तिरस प्रधान रचनाएँ प्रायः इसी छन्द में रची जाती हैं। भक्तामर स्तोत्र की रचना इसी छन्द में की है आचार्य मानतुंगने। ग्यारहवाँ पाठ में त्रोटक छन्द का वर्णन है, यह बारह वर्ण वाला छन्द है। बारहवाँ पाठ में बारह वर्ण वाले भुजंग प्रयात छन्द का रचना क्रम तथा रचना कौशल दर्शाया। इसकी प्रत्येक पंक्ति में चार यगण होते हैं। तेरहवाँ पाठ में ग्यारह वर्ण वाला इन्द्रवज्रा छन्द का रचना करना सिखाया।

मेरे दीक्षा-शिक्षा गुरुवर श्री विरागसागर जी मुनिराज की चरण सेवा कर यह काव्य कला सीखने का मुझे शुभ अवसर मिला। सन् 1994 से 2021 अभी तक 27 वर्ष हो रहे काव्य कला को मैं निरन्तर विकसित करता रहा।

मेरा अभ्यास कार्य ही मेरा काव्य साहित्य बन गया। मेरी काव्य-चेष्टा ही मेरी आनन्द दायिनी माँ बन गयी।

इस पुस्तक के सृजन में मुझे श्रमण शुद्धात्म सागर एवं श्रमण शुद्धोपयोग सागर का कलात्मक रीति एवं लिपिकरण में भरपूर सहयोग मिला। मेरे काव्य पुरुष महाकवि गणाचार्य गुरुवर के आशीर्वाद से यह कृति आपके करकमलों में---।

॥ श्री 1008 आदिनाथाय नमः ॥

मूलनायक श्री 1008 आदिनाथ भगवान

मुंगाणा वर्षायोग-2021

सारस्वत कवि आचार्य श्री विभवसागर जी महाराज ससंघ

पुण्यार्जक परिवार

श्री जयन्तिलाल जी-श्रीमती लीलादेवी रजावत
निलेश-नितादेवी जैन
खुशी, डिम्पी, तनुश्री जैन (पौत्री)
अनिमेष जैन (पौत्र) रजावत परिवार

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय–परिचय		पृष्ठ
1.	पहला पाठ	मात्रा विज्ञान	1
		लघु मात्रा, दीर्घ मात्रा	
		व्यंजन वर्ण, जोड़ाक्षर	2
		द्वित्व व्यंजन	3
		मात्रा गणना ज्ञान चक्र	3
2.	दूसरा पाठ	मात्रिक छन्द रचना	
		मानव छन्द	6
3.	तीसरा पाठ	चौपाई छन्द	11
4.	चौथा पाठ	दोहा छन्द	14
5.	पाँचवाँ पाठ	सोरठा छन्द	17
6.	छठवाँ पाठ	विष्णुपद छन्द	19
7.	सातवाँ पाठ	वार्णिक छन्द परिचय	22
8.	आठवाँ पाठ	अनुष्टुभ् छन्द	28
9.	नौवाँ पाठ	लावनी जिनोदय छन्द	30
10.	दसवाँ पाठ	वसन्ततिलका	35
11.	ग्यारहवाँ पाठ	त्रोटक छन्द	38
12.	बारहवाँ पाठ	भुजंगप्रयात	40
13.	तेरहवाँ पाठ	इन्द्रवज्रा छन्द	42

पहला पाठ

मात्रा विज्ञान

लघुमात्रा	अ –	इ ि	उ ु	ऋ ृ
एकमात्रा	क् + अ क ।	क् + इ कि ।	क् + उ कु ।	क् + ऋ कृ ।

दीर्घ मात्रा	आ ा क् + आ का	ई ी क् + ई की	ऊ ू क् + ऊ कू
दो मात्रा	ऽ	ऽ	ऽ

नित्य दीर्घ (गुरु)	ए े क् + ए के	ऐ ै क् + ऐ कै	ओ ो क् + ओ को	औ ौ क् + औ कौ
दो मात्रा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अनुस्वार	अं ं क् + अं कं	अः : क् + अः क :	विसर्ग
दो मात्रा	ऽ	ऽ	दो मात्रा

व्यंजन वर्ण

क्	ख्	ग्	घ्	ङ्		
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्		
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	ड़्	ढ़्
त्	थ्	द्	ध्	न्		
प्	फ्	ब्	भ्	म्		

य्	र्	ल्	व्
श्	ष्	स्	ह्
क्ष्	त्र्	ज्ञ्	श्र्

	जोड़ाक्षर	उदाहरण
क्ष	क् + ष् + अ	= कक्ष
त्र	त् + र् + अ	= पत्र
ज्ञ	ज् + ञ् + अ	= यज्ञ
श्र	श् + र् + अ	= श्रम

द्वित्व व्यंजन परिचय

	उदाहरण
म् + म = म्म	अम्मा
त् + त = त्त	पत्ता
ट् + ट = ट्ट	मिट्टी
च् + च = च्च	कच्चा
प् + प = प्प	खप्पर
ज् + ज = ज्ज	लज्जा

मात्रा गणना ज्ञान चक्र

विश्लेषण	स् + ए + ब् + अ
शब्द	सेब
मात्रा	ऽ । = 3
	क् + उ + म् + ह् + आ + र् + अ
	कुम्हार
	ऽ ऽ । = 5
	फ् + ऊ + ल् + अ
	फूल
	ऽ । = 3

मात्रा गणना चक्र

च् + अ + क् + क् + ई

चक्की

ऽ ऽ = 4

म् + अं + द् + इ + र् + अ

ं ि –

ऽ मंदिर । ।

ऽ । । = 4

ब् + आ + ल् + अ + क् + अ

बालक

ऽ । । = 4

म् + ओ + र् + अ

मोर

ऽ । = 3

घ् + अ + र् + अ

घर

। । = 2

अभ्यास–1

प्रश्न 1. – लघु मात्रा का प्रयोग व्यंजन वर्णों में जोड़कर करिए ?

प्रश्न 2. – हमेशा दो मात्रा किन–किन वर्णों की होती हैं ?

प्रश्न 3. – अनुस्वार और विसर्ग सहित वर्ण की कितनी–कितनी मात्रा होती हैं ?

प्रश्न 4. – क्ष, क्षा, कक्ष, कक्षा इन की मात्रा गणना कीजिए ?

प्रश्न 5. – फल और फूल की मात्रा लिखकर गिनिए ?

दूसरा पाठ

मात्रिक छन्द

मानव छन्द

सममात्रिक

नियम– 1. चार पंक्तियाँ
2. 14–14 मात्रा (प्रत्येक चरण में)
3. चरणांत में तुक मिलाना (अंत अनुप्रास)

उदारहण– 1. मछली जल की रानी है।
। । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 14
जीवन उसका पानी है।।
ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 14

2. द्रव्य शान्ति हो शान्ति प्रभो,
ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ = 14
क्षेत्र शान्ति हो शान्ति प्रभो।
ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ = 14
काल शान्ति हो शान्ति प्रभो,
ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ = 14
आत्म शान्ति हो शान्ति प्रभो।।
ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ = 14

– आ. विभवसागर

सतपुड़ा के घने जंगल

भवानी प्रसाद मिश्र

3. सतपुड़ा के घने जंगल
।।।ऽ ऽ । ऽ ऽ । । = 14
नींद में डूबे हुए से।
ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ = 14
ऊँघते अनवने जंगल,
ऽ । ऽ ।।।ऽ ऽ । । = 14
झाँड़ ऊँचे और नीचे।
ऽ । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ = 14
चुप खड़े हैं आँख मीचे।
। । । ऽ ऽ ऽ । ऽ ऽ = 14
घास चुप है कास चुप है,
ऽ । । । ऽ ऽ । । । ऽ = 14
मूक साल पलाश चुप है।
ऽ । ऽ । । ऽ । । । ऽ = 14

मंगलगीता

–कवि फूलचन्द्र 'पुष्पेन्दु' खुरई

4\. नत मस्तक सुर भक्तों के,
। । ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ = 14

जिनवर पद अनुरक्तों के।
। । । । । । । । ऽ ऽ ऽ = 14

मुकुटों की झिलमिल मणियाँ,
। । ऽ ऽ । । । । । । ऽ = 14

मणियों की हीरक लड़ियाँ।
। । ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ = 14

उदाहरण–

5\. तुझको बहते जाना है,
। । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 14

सागर का तट पाना है।
ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 14

सागर से पहले तुझको,
ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ = 14

गागर – गागर जाना है।।
ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 14

(प्रमोद तिवारी)

घर की याद

भवानी प्रसाद मिश्र

उदाहरण–

6\. आज पानी गिर रहा है,
ऽ । ऽ ऽ । । । ऽ ऽ = 14

बहुत पानी गिर रहा है।
। । । ऽ ऽ । । । ऽ ऽ = 14

रात भर गिरता रहा है,
ऽ । । । । । ऽ । ऽ ऽ = 14

प्राण मन घिरता रहा है।।
ऽ । । । । । ऽ । ऽ ऽ = 14

उदाहरण–

7\. यहाँ सैकड़ों महिलाएँ,
। ऽ ऽ । ऽ । । ऽ ऽ = 14

बनती रहती माताएँ।
। । ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 14

सौ–सौ बालक जनती हैं,
ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ = 14

पुनः प्रसूता बनती हैं।।
। ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ऽ = 14

लेखक–फूलचन्द्र ''पुष्पेन्दु''

अभ्यास–2

प्रश्न 1. – मानव छन्द में कितनी मात्रा होती हैं?

प्रश्न 2. – "मछली जल की रानी है" इसमें मात्रा गणना करके बताइए?

प्रश्न 3. – मानव छन्द में आप स्वयं स्वेच्छा से कविता लिखिए?

तीसरा पाठ

चौपाई

सममात्रिक छन्द

नियम– 1. चार चरण
2. 16–16 मात्रा
3. चरणान्त में दो दीर्घ (ऽऽ)
4. अन्त में अनुप्रास (तुक)
दो दीर्घ + तुक

उदाहरण–

1. शान्ति नाथ मुख शशि उनहारी।
ऽ । ऽ । । । । । । । ऽ ऽ = 16

शील गुणव्रत संयम धारी।।
ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ = 16

लखन एक सौ आठ विराजे।
। । । ऽ । ऽ ऽ । । ऽ ऽ = 16

निरखत नयन कमल दल लाजे।।
। । । । । । । । । । । । ऽ ऽ = 16

उदाहरण–

2. इह विध मंगल आरति कीजे।
। । । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ = 16

पंच परम पद भज सुख लीजे ।।
ऽ । । । । । । । । । । । ऽ ऽ = 16

पहली आरति श्री जिनराजा ।
। । ऽ ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ = 16

भवदधि पार उतार जिहाजा।।
। । । । ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ = 16

3. पारसनाथ जगत हितकारी ।
ऽ । । ऽ । । । । । । ऽ ऽ = 16

हो स्वामी तुम व्रत के धारी।।
ऽ ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ = 16

सुर नर असुर करें तुम सेवा ।
। । । । । । । । ऽ । । ऽ ऽ = 16

तुम ही हो देवन के देवा ।।
। । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 16

अभ्यास–3

प्रश्न 1. – चौपाई छन्द का लक्षण बताइए ?

प्रश्न 2. – चौपाई में कितनी मात्रा होती है ?

प्रश्न 3. – किसी भी पुस्तक से चार चौपाई खोजिए ?

प्रश्न 4. – स्वेच्छा से चौपाई छन्द रचना कीजिए ?

चौथा पाठ

दोहा
(अर्द्ध सममात्रिक)

नियम– 1. चार–चरण (दो पंक्तियों में)

2.

	पहला	तीसरा	दूसरा	चौथा
चरण =	1	3	2	4
मात्रा =	13	13	11	11

3. दूसरे चौथे चरणान्त में ऽ। एवं तुक (अनुप्रास)

उदाहरण–

श्री जिनवर की आशिका,
ऽ ।।।।ऽ ऽ।ऽ = 13

लीजे शीश चढ़ाय।
ऽऽ ऽ। ।ऽ। = 11

भव भव के पातक कटें,
।। ।। ऽ ऽ।। ।ऽ = 13

दु:ख दूर हों जाय।।
ऽ। ऽ। ऽ ऽ। = 11

उदाहरण–

2. काल करे सो आज कर,
ऽ। ।ऽ ऽ ऽ। ।। = 13

आज करे सो अब्ब।
ऽ। ।ऽ ऽ ऽ। = 11

पल में परलय होयगा,
।। ऽ ।।।।। ऽ।ऽ = 13

बहुरि करेगा कब्ब।।
।।। ।ऽऽ ऽ। = 11

उदाहरण–

3. जिनवाणी के ज्ञान ते,
।।ऽऽ ऽ ऽ। ऽ = 13

सूझे लोकालोक।
ऽऽ ऽऽऽ। = 11

सो वाणी मस्तक चढ़ो,
ऽ ऽऽ ऽ।। ।ऽ = 13

सदा देत हों धोक।।
।ऽ ऽ। ऽ ऽ। = 11

उदाहरण–

4. इह विधि ठाड़ो होय के,
। । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ = 13

प्रथम पढ़े जो पाठ।
। ।। । ऽ ऽ ऽ । = 11

धन्य जिनेश्वर देव तुम,
ऽ । । ऽ । । ऽ । । । = 13

नाशे कर्म जु आठ।।
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । = 11

अभ्यास–4

प्रश्न 1. – दोहा में कितने चरण होते हैं?

प्रश्न 2. – दोहा के पहले दूसरे चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं?

प्रश्न 3. – दोहा के दूसरे तथा चौथे चरण के अन्त में क्या–क्या होना अनिवार्य है?

प्रश्न 4. – स्वतंत्र रूप से आप दोहा लिखिए एवं उसकी मात्राएँ गिनाइए?

प्रश्न 5. – कोई भी दो दोहा कण्ठस्थ करिए?

पाँचवाँ पाठ

सोरठा
(दोहा उल्टा सोरठा)

नियम– 1. चार–चरण (दो पंक्तियों में)

2.

	पहला	तीसरा	दूसरा	चौथा
चरण =	1	3	2	4
मात्रा =	11	11	13	13
चरणांत =	....ऽ ।	.....ऽ ।		

3. पहले तीसरे चरणान्त में ऽ । एवं तुक (अनुप्रास)

उदाहरण–

1. हेमाचल की धार,
ऽ ऽ । । ऽ ऽ । = 11

मुनि – चित सम शीतल सुरभि।
। । । । । । ऽ । । । । । = 13

भव – आताप निवार,
। । ऽ ऽ । । ऽ । = 11

दश – लच्छन पूजौं सदा।।
। । ऽ । । ऽ ऽ । ऽ = 13

उदाहरण–

2. प्रथम पढ़े जो पाठ,
। । । । ऽ ऽ ऽ । = 11

इह विधि ढ़ाड़ो होय के।
। । । । ऽ ऽ ऽ । ऽ = 13

नाशे कर्म जु आठ,
ऽ ऽ ऽ । । ऽ । = 11

धन्य जिनेश्वर देव तुम।।
ऽ । । ऽ । । ऽ। । । = 13

अभ्यास–5

प्रश्न 1. – सोरठा छन्द का मुख्य नियम क्या है ?

प्रश्न 2. – सोरठा में कितने चरण होते हैं ?

प्रश्न 3. – पहले, तीसरे, दूसरे, चौथे चरण में क्रमश: कितनी–कितनी मात्राएँ होती हैं ?

प्रश्न 4. – किसी भी एक दोहा को सोरठा में बदलिए ?

प्रश्न 5. – दोहा को सोरठा में बदलने की विधि लिखिए ?

छठवाँ पाठ

विष्णुपद छन्द
(26 मात्रिक)

नियम–
1. चार पंक्तियाँ
2. प्रत्येक पंक्ति में 26–26 मात्रा
3. 16 पर यति 10 पर विराम कुल 26
4. लघु गुरु क्रम नहीं
5. अनुप्रास (तुकांत)

यति = अल्प विराम
विराम = पूर्ण विराम

उदाहरण–

1. कहाँ गये चक्री जिन जीता,
। ऽ । ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ = 16

भरत खण्ड सारा।
। । । ऽ । ऽ ऽ = 10

कहाँ गये वह राम रु लक्ष्मण,
। ऽ । ऽ । । ऽ । । ऽ । । = 16

जिन रावण मारा।
। । ऽ । । ऽ ऽ = 10

कहाँ कृष्ण रुक्मणि सतभामा,
। ऽ ऽ । ऽ । । । । ऽ ऽ = 16

अरु संपति सगरी।।
। । ऽ । । । । ऽ = 10

कहाँ गये वह रंगमहल अरु,
। ऽ । ऽ ।। ऽ।।।। ।। = 16
सुवरण की नगरी।।
।।।। ऽ ।।ऽ = 10

उदाहरण–

2. मरण समय गुरु पाद मूल हो,
।।। ।।। ।। ऽ। ऽ। ऽ = 16
संत समूह रहे।
ऽ। ।ऽ। ।ऽ = 10

जिनालयों में जिनवाणी की,
।ऽ।ऽ ऽ ।।ऽऽ ऽ = 16
गंगा नित्य बहे।।
ऽऽ ऽ। ।ऽ = 10

भव – भव में सन्यास मरण हो,
।। ।। ऽ ऽऽ। ।।। ऽ = 16
नाथ हाथ धर दो।
ऽ। ऽ। ।। ऽ = 10

मेरा अंतिम मरण समाधी,
ऽऽ ऽ।। ।।। ।ऽऽ = 16
तेरे दर पर हो।।
ऽऽ ।। ।। ऽ = 10

अभ्यास–6

प्रश्न 1. – विष्णुपद छन्द कितनी मात्रा वाला छन्द है ?

प्रश्न 2. – विष्णुपद छन्द में कितनी–कितनी मात्राओं पर यति, विराम होता है ?

प्रश्न 3. – छन्द शास्त्र में यति किसे कहते हैं ?

प्रश्न 4. – विराम किसे कहते हैं, और कहाँ लगाया जाता है ?

प्रश्न 5. – विष्णुपद छन्द की रचना करते हुए आप कविता लिखिए ?

सातवाँ पाठ

वार्णिक छन्द

वार्णिक – वर्णों की संख्या, पर आधारित

वर्ण – स्वर सहित अक्षर अथवा स्वर

गण – तीन वर्णों का समूह

गण – आठ होते हैं, वे एक दूसरे से भिन्न होते हैं।

आठ गण – य मा ता रा ज भा न स ल गा: = 10 वर्ण

गणनाम		उदाहरण		रचना
यगण		यमाता		। ऽ ऽ
मगण		मातारा		ऽ ऽ ऽ
तगण		ताराज		ऽ ऽ ।
रगण		राजभा		ऽ । ऽ
जगण		जभान		। ऽ ।
भगण		भानस		ऽ । ।
नगण		नसल		। । ।
सगण		सलगा:		। । ऽ
लघु		ल		।
गुरु		गा:		ऽ

एक वर्ण वाले छन्द
"श्री छन्द"

नियम – 1. चार चरण।

2. प्रत्येक चरण में एक–एक ही दीर्घ वर्ण।

उदाहरण –

1.

य:	श्री: ।
ऽ	ऽ
सा,	गौ ।।
ऽ	ऽ

2.

हे !,	हे! ।
ऽ	ऽ
हे !,	हे! ।।
ऽ	ऽ

दो वर्ण वाले छन्द
"नारी छन्द"

नियम – 1. दो – दो वर्ण, दोनों गुरु

उदाहरण –

वीरा,	वीरा ।
ऽ ऽ	ऽ ऽ
आओ,	वीरा ।।
ऽ ऽ	ऽ ऽ

चार वर्ण वाले छन्द
"कन्या छन्द"

गम – गा:, मातारा
ऽ ऽ ऽ ऽ

उदाहरण –

1. प्यारे बच्चो, आओ आओ।
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

नाचो – गाओ, प्यारे बच्चो।।
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

उदाहरण –

2. मेरा बेटा, राजा बेटा।
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

प्यारा – प्यारा, मेरा बेटा।।
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

छह वर्ण वाले छन्द
शशि वदना

लक्षण – न , य शशिवदना
नगण , यगण
। । । । ऽ ऽ
नसल , यमाता

नियम – 6 वर्ण वाले चार चरण

उदाहरण–

1. नमन हमारा, नमन हमारा।
।।। ।ऽऽ ।।। ।ऽऽ

जिनवर मेरे, नमन हमारा।।
।।।। ऽऽ ।।। ।ऽऽ

उदाहरण–

2. विनय सिखा दो, सुनय सिखा दो,
। । । । ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ

गुरुवर मेरे, सुपथ दिखा दो।।
।।।। ऽऽ ।।। । ऽ ऽ

सात वर्ण वाले छन्द
(मधुवती)

न, न, ग (5, 2)

नसल	नसल	गा:	= 7
। । ।	। । ।	ऽ	= 8

लक्षण = 7 वर्ण वाले चारों चरण, 5 वर्ण पर यति, 2 पर विराम।

उदाहरण–

1. जय विजय अहो,
नय सुनय लहो।
पथ सुपथ गहो,
शुभ सुभग रहो।।

उदाहरण–

2. गुरु नमन करूँ,
पद विनय करूँ।
श्रुत श्रवण करूँ,
नित चरण परूँ।।

अभ्यास–7

प्रश्न 1. – वार्णिक छन्द किसे कहते हैं?

प्रश्न 2. – अम्मा शब्द में कितने वर्ण हैं?

प्रश्न 3. – अ इ उ ण शब्द में कितने वर्ण हैं?

प्रश्न 4. – गण किसे कहते हैं, कितने होते हैं, उनके नाम बताइए?

प्रश्न 5. – गण रचना का सूत्र लिखकर, सारिणी बनाकर गणनाम, उदाहरण, मात्रा गणना कीजिए?

प्रश्न 6. – एक वर्ण वाले श्री छन्द की रचना कीजिए?

प्रश्न 7. – दो वर्ण वाले नारी छन्द में कविता लिखिए?

प्रश्न 8. – चार वर्ण वाले कन्या छन्द में नई कविता लिखिए?

प्रश्न 9. – छह वर्ण वाले शशिवदना छन्द में कविता याद कीजिए?

प्रश्न 10. – सात वर्ण वाले मधुवती छन्द का लक्षण लिखिए?

आठवाँ पाठ

अनुष्टुभ् छन्द (आठ वर्ण)

श्लोक

चरण	वर्ण	चरण	वर्ण	
1, 3..........	5 6 7	.. 2, 4..	5 6 7	....
....	। ऽ ऽ	....	। ऽ ।	......
....	1 2 2	....	1 2 ।	......
....	यमाता	....	जहान	......
....	यगण	....	जगण	......

नियम = पहले, तीसरे में 5 6 7 वर्ण यगण
। ऽ ऽ यमाता
दूसरे, चौथे में 5 6 7 वर्ण जगण
। ऽ । जहान

अंक विधि में छन्द नियम

1, 3	2, 4	चरण
5 6 7	5 6 7	वर्ण
1 2 2	1 2 1	मात्रा

उदाहरण –1. दर्शनं दे व देवस्य, दर्शनं पाप नाशनम्।
। ऽ ऽ । ऽ ।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शनं मोक्ष साधनम्।।
। ऽ ऽ । ऽ ।

उदाहरण –2. वीतराग जिनेशों का, उपदेश सदा सुनो।
प्रवचन कला सीखो, आचरण करो सदा।।

अभ्यास–8

प्रश्न 1. – श्लोक रचना किस छन्द में होती है ?

प्रश्न 2. – श्लोक के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं ?

प्रश्न 3. – श्लोक के सभी चरणों में पाँचवाँ एवं छठवाँ वर्ण कैसा होता है ?

प्रश्न 4. – श्लोक का सातवाँ वर्ण पहले, तीसरे तथा दूसरे चौथे चरण में कैसा होता है ?

प्रश्न 5. – 13/567/122 तथा 24/567/121 का अर्थ क्या है, नियम लिखकर समझाइए ?

नौवाँ पाठ

लावनी

(जिनोदय छन्द)

नियम–
1. चार पंक्तियाँ
2. प्रत्येक पंक्ति में 30–30 मात्रा
3. 16 मात्रा पर यति, 14 पर विराम
4. तुकांत कविता

नोट–
ताटंक ऽ ऽ ऽ अंत
कुकुभ ऽ ऽ अंत
लावनी – नियम नहीं।

उदाहरण–

1.

जिसने राग द्वेष कामादिक,
। । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । = 16

जीते सब जग जान लिया।
ऽ ऽ । । । । ऽ । । ऽ = 14

सब जीवों को मोक्षमार्ग का,
। । ऽ ऽ ऽ ऽ । ऽ । ऽ = 16

निस्पृह हो उपदेश दिया।।
ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ = 14

उदाहरण–

2.

भक्त अमर नत मुकुट सुमणियों,
ऽ । । । । । । । । । । । । ऽ = 16

की सुप्रभा का जो भासक।
ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ । । = 14

पापरूप अतिसघन तिमिर का,
ऽ । ऽ । । । । । । । । । ऽ = 16

ज्ञान दिवाकर सा नाशक।।
ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ । । = 14

भवजल पतित जनों को जिसने,
। । । । । । । । ऽ ऽ । । ऽ = 16

दिया आदि में अवलम्बन।
। ऽ ऽ । ऽ । । ऽ । । = 14

उनके चरण कमल को करते,
। । ऽ । । । । । । ऽ । । ऽ = 16

सम्यक् बारम्बार नमन।।
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । । । = 14

उदाहरण–

3.

भला किसी का कर न सको तो,
। ऽ । ऽ ऽ । । । । ऽ ऽ = 16

बुरा किसी का मत करना।
। ऽ । ऽ ऽ । । । । ऽ = 14

पुष्प नहीं बन सकते हो तो,
ऽ । । ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ = 16

काँटे बनकर मत रहना।।
ऽ ऽ । । । । । । । । ऽ = 14

उदाहरण– 4.

चारु चन्द्र की चंचल किरणें,
ऽ । ऽ । ऽ ऽ । । । । ऽ = 16

खेल रहीं थी जल थल में।
ऽ । । ऽ ऽ । । । । ऽ = 14

स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई थी,
ऽ । ऽ । ऽ । ऽ । ऽ ऽ = 16

अवनि और अम्बर तल में।।
। । । ऽ । ऽ । । । । ऽ = 14

पुलक प्रकट करती है धरती,
। । । । । । । । ऽ ऽ । । ऽ = 16

हरित तृणों की नोकों से।
। । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ = 14

मानो झूम रहे हैं तरु भी,
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ = 16

मन्द पवन के झोंकों से।।
ऽ । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 14

उदाहरण– 5.

मानस्तंभ रचा रत्नों से,
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ ऽ = 16

कैसे मान गलाता है।
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 14

रत्नराशि का ढेर दूसरा,
ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ । ऽ = 16

मन में मान दिलाता है।।
। । ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 14

आप विराजे उसके अन्दर,
ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ ऽ । । = 16

चमत्कार कर देता है।
। ऽ ऽ । । । ऽ ऽ ऽ = 14

मान विखण्डित होता भवि का,
ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ । । ऽ = 16

दर्शन जो कर लेता है।।
ऽ । । ऽ । । ऽ ऽ ऽ = 14

उदाहरण– 6.

बुंदेलें हर बोलो के मुँह,
ऽ ऽ ऽ । । ऽ ऽ ऽ । । = 16

हमनें सुनी कहानी थी।
। । ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ = 14

खूब लड़ी मर्दानी वह तो,
ऽ । ।ऽ ऽऽऽ ।। ऽ = 16

झाँसी वाली रानी थी।।
ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ = 14

नाना के सँग पढ़ती थी वह,
ऽ ऽ ऽ ।। ।।ऽ ऽ ।। = 16

नाना के सँग खेली थी।
ऽ ऽ ऽ ।। ऽ ऽ ऽ = 14

बरछी ढाल कृपाण कटारी,
।।ऽ ऽ। ।ऽ। ।ऽऽ = 16

उसकी यही सहेली थी।।
।।ऽ ।ऽ ।ऽऽ ऽ = 14

अभ्यास–9

प्रश्न 1. – लावनी छन्द में कितनी मात्रा होती हैं?

प्रश्न 2. – जिनोदय छन्द में कितनी पंक्तियाँ होती हैं?

प्रश्न 3. – जिनोदय छन्द में यति एवं विराम कितनी–कितनी मात्रा पर होता है?

प्रश्न 4. – जिनोदय के दो उदाहरण लिखिए?

प्रश्न 5. – झाँसी की रानी काव्य पाठ से दो पंक्तियों की मात्रा गिनाइए?

दसवाँ पाठ

वसन्ततिलका छन्द

नियम – "तभजाजगौगा:"
तगण, भगण, जगण, जगण, गुरु, गुरु = 14 वर्ण

क्रमश: – ऽऽ।, ऽ।।, ।ऽ।, ।ऽ।, ऽ, ऽ = 14 वर्ण

क्रमश: – चौदह वर्ण वाली चार पंक्तियाँ

उदाहरण–
1.

भक्ताम रप्रण तमौलि मणिप्र भाणा, = 14
ऽ ऽ । ऽ।। । ऽ । । ऽ । ऽ ऽ

मुद्योत कंदलि तपाप तमोवि तानं। = 14
ऽ ऽ। ऽ।। ।ऽ। । ऽ । ऽ ऽ

सम्यक्प्र णम्यजि नपाद युगंयु गादा, = 14
ऽ ऽ । ऽ ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

वालंव नंभव जलेप ततांज नानाम्।। = 14
ऽ ऽ । ऽ।। ।ऽ। ।ऽ। ऽ ऽ

उदाहरण–
2.

रागादि दोष मल मर्दन हेतु येवा।
ऽ ऽ । ऽ । ।। ऽ।। ऽ। ऽऽ

चर्चों पदाब्ज तव शीतलनाथ देवा।।
ऽ ऽ ।ऽ। ।। ऽ।।ऽ। ऽऽ

उदाहरण–

3.

ओ देवता दरश दो जिनदेव प्यारे,
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

तेरे लिए तरशते दृग दो हमारे।
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

हे नाथ ना तुम पुनः अवतार लोगे,
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

विश्वास है विभव हो भव तार दोगे।।
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

उदाहरण–

4.

तेरे पवित्र पद ये जब से छुए हैं,
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

मेरे पवित्र कर ये तब से हुए हैं।
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

तेरी कृपा बरषती मुझपे निराली,
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

प्रत्येक काल लगती हमको दिवाली।।
ऽ ऽ I ऽ I I I ऽ I I ऽ I ऽ ऽ

–आ. विभवसागर

अभ्यास–10

प्रश्न 1. – वसन्त तिलका छन्द का नियम सूत्र सुनाइए?

प्रश्न 2. – तभजाजगौगाः इस सूत्र से गण रचना करते हुए चौदह वर्णों के दीर्घ, ह्रस्व आदि चिन्ह दर्शाइए?

प्रश्न 3. – वसन्त तिलका छन्द के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं तथा एक काव्य में कुल वर्ण कितने होंगे?

प्रश्न 4. – वसन्त तिलका छन्द का एक उदाहरण लिखिए?

प्रश्न 5. – वसन्त तिलका छन्द में एक काव्य की स्वतंत्र रचना कीजिए?

ग्यारहवाँ पाठ

त्रोटक छन्द

नियम – 1. 4 चरण
2. 4 सगण
3. बारह वर्ण प्रत्येक में

सलगाः सलगाः सलगाः सलगाः
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

उदाहरण–

1. जय हो जय हो जय हो जय हो,
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
जय द्रोणगिरी जय हो जय हो।
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
जय हो जय हो जय हो जय हो,
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
गुरुदत्त सदा जय हो जय हो।।
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

उदाहरण–

2. जय शीतलनाथ जिनन्द वरं,
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
भवदुः खदवानल मेघझरं।
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
दुखभूभृत भंजन वज्रसमं,
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
भवसागर नागर पोतपमं।।
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

उदाहरण–

3. जय शान्ति प्रभो! जय शान्ति जया!
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
जय शान्ति प्रभो! जय शान्ति जया।
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
जय शान्ति प्रभो! शुभ नाम जया!
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ
जय शान्ति प्रभो! शिव धाम जया।।
। । ऽ । । ऽ । । ऽ । । ऽ

अभ्यास–11

प्रश्न 1. – त्रोटक छन्द में कितनी बार सगण का प्रयोग है?

प्रश्न 2. – त्रोटक छन्द कितने वर्ण वाला छन्द है?

प्रश्न 3. – एक सगण में कितने वर्ण लघु, गुरु होते हैं?

प्रश्न 4. – त्रोटक छन्द में काव्य रचना कीजिए?

प्रश्न 5. – त्रोटक छन्द का एक उदाहरण लिखिए?

बारहवाँ पाठ

बारह वर्ण वाला
भुजंगप्रयात छन्द

नियम – 4 चरण
4 यगण – यमाता, यमाता, यमाता, यमाता।
क्रमशः– । ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ, । ऽ ऽ

उदाहरण–
1.
नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं,
।ऽऽ । ऽ ऽ ।ऽऽ । ऽ ऽ
शतेन्द्रं सु पूजैं भजैं नाय शीशं।
। ऽऽ । ऽऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
मुनीन्द्रं गणेन्द्रं नमों जोड़ि हाथं,
। ऽ ऽ ।ऽ ऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ
नमो देवदेवं सदा पार्श्वनाथं।।
। ऽ ऽ।ऽऽ । ऽ ऽ । ऽ ऽ

उदाहरण–
2.
महामंगलों का महारूप है ये,
।ऽ ऽ। ऽ ऽ । ऽऽ। ऽ ऽ
महामंदिरों का महामूर्त है ये।
। ऽऽ।ऽ ऽ ।ऽऽ। ऽ ऽ
महामूर्तियों का यहाँ है बसेरा,
।ऽऽ । ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।ऽऽ
महामंत्र गूँजे निशा वा सबेरा।।
। ऽऽ। ऽऽ । ऽ ऽ ।ऽऽ

अभ्यास–12

प्रश्न 1. – भुजंगप्रयात छन्द कितने वर्ण वाला छन्द है?

प्रश्न 2. – भुजंगप्रयात छन्द में कितनी बार यगण का प्रयोग है?

प्रश्न 3. – यगण में कितने लघु, गुरु होते हैं?

प्रश्न 4. – भुजंगप्रयात छन्द का एक उदाहरण कण्ठस्थ कीजिए?

प्रश्न 5. – भुजंगप्रयात छन्द में नवीन रचना कीजिए?

तेरहवाँ पाठ

इन्द्रवज्रा छन्द

ग्यारह वर्ण वाला

नियम – ततजगौग:

तगण तगण जगण गुरु गुरु

ताराज ताराज जभान गा:, गा:

क्रमश:– ऽ ऽ। ऽ ऽ। । ऽ। ऽ ऽ = 11 वर्ण

चार चरण

उदाहरण–
1.

मैं कौन मेरा निज धर्म क्या है?
ऽ ऽ। ऽऽ । । ऽ। ऽ ऽ
क्या प्राप्य पाना शुभ कर्म क्या है?
ऽ ऽ। ऽऽ । । ऽ। ऽ ऽ
जो ये विचारे वह लक्ष्य पाये,
ऽ ऽ । ऽऽ ।। ऽ । ऽऽ
जो ना विचारे भव व्यर्थ जाये।।
ऽ ऽ । ऽऽ ।। ऽ। ऽऽ

उदाहरण–
2.

आनंददायी परिवार मेरा।
ऽ ऽ।ऽ ऽ ।।ऽ। ऽऽ
है सौख्य दायी परिवार मेरा।।
ऽ ऽ। ऽ ऽ ।।ऽ। ऽऽ
संस्कार शाली परिवार मेरा।
ऽ ऽ। ऽ ऽ ।।ऽ। ऽऽ
सम्मान दायी परिवार मेरा।।
ऽ ऽ। ऽ ऽ ।।ऽ। ऽऽ

उदाहरण–
3.

डाली लगा जो पक जाय अच्छा,
ऽ ऽ । ऽ ऽ ।। ऽ। ऽ ऽ
वो ही रसीला फल स्वाद देता।
ऽ ऽ ।ऽ ऽ ।। ऽ । ऽऽ
स्वादिष्ट ऐसा फल चाहते तो,
ऽ ऽ। ऽऽ ।। ऽ।ऽ ऽ
थोड़ी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।।
ऽ ऽ । ऽऽ ।।ऽ ।ऽ ऽ

उदाहरण–
4.

निर्ग्रन्थ योगी ! निरवद्य योगी,
ऽ ऽ। ऽ ऽ ।।ऽ। ऽ ऽ
शुद्धोपयोगी श्रुतज्ञान भोगी।
ऽ ऽ ।ऽऽ ।।ऽ। ऽ ऽ
भो ब्रह्मचारी व्रतशील धारी,
ऽ ऽ।ऽऽ ।।ऽ। ऽ ऽ
हे श्रेयकारी जय हो तुम्हारी।।
ऽ ऽ।ऽ ऽ ।। ऽ ।ऽऽ

अभ्यास-13

प्रश्न 1. – इन्द्रवज्रा छन्द कितने वर्ण वाला है?

प्रश्न 2. – इन्द्रवज्रा छन्द का लक्षण (नियम) सूत्र क्या है?

प्रश्न 3. – ततजगौगा: का गण विस्तार कीजिए?

प्रश्न 4. – ''आनंददायी परिवार मेरा'' इस पंक्ति में वर्णक्रम दर्शाकर छन्द का नाम बताइए?

प्रश्न 5. – इन्द्रवज्रा छन्द का एक उदाहरण लिखिए?

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य डॉ. विभवसागर मुनिराज

पूर्व नाम	–	पं. अशोक कुमार जी जैन ''शास्त्री''
जन्म स्थान	–	किशनपुरा (सागर)
जन्मतिथि	–	कार्तिक कृष्ण अमावस्या 2033, तदनुकूल 23 अक्टूबर, 1976
पिताश्री	–	श्रावक रत्न श्री लखमीचन्द्र जी जैन (क्षुल्लक श्री सिद्धसागर जी महाराज)
माताश्री	–	श्राविका-रत्न श्रीमती गुलाबबाई जैन (समाधिस्थ आर्यिका प्राज्ञाश्री माताजी)
शिक्षा	–	इण्टर संस्कृत शास्त्री प्रथम वर्ष
धार्मिक शिक्षा	–	धर्मशास्त्री द्वितीय वर्ष
शिक्षण संस्थान	–	श्री गणेशप्रसाद वर्णी दि. जैन महाविद्यालय, मोराजी, सागर (म.प्र.)
वैराग्य	–	9 अक्टूबर, 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत लिया
क्षुल्लक दीक्षा	–	28 जनवरी, 1995, मंगलगिरि, सागर (म.प्र.)
ऐलक दीक्षा	–	23 फरवरी, 1996, देवेन्द्र नगर जिला-पन्ना (म.प्र.)
मुनि दीक्षा	–	14 दिसम्बर, 1998, अतिशय क्षेत्र बरासौ, भिण्ड (म.प्र.)
दीक्षा गुरु	–	गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज
आचार्य पद	–	31 मार्च, 2007, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)
विशेष	–	जैन आगमरूपी मानसरोवर के राजहंस की तरह झलक देने वाले प्रज्ञा श्रमण की प्रवचन शैली जन-जन द्वारा हृदयग्राह्य है।
रुचि	–	पठन-पाठन, काव्य, सृजन, चिंतन, मनन
कृतियाँ	–	अभी तक आचार्य श्री द्वारा 84 कृतियों की सर्जना की गई है जो इसी पुस्तक में सूचीबद्ध है।
अलंकरण	–	''सारस्वत-श्रमण'', ''सारस्वत कवि'', ''शास्त्र कवि'' ''नय चक्रवर्ती'', ''संस्कृताचार्य'', विद्यावाचस्पति (डॉक्टर)''

सारस्वत कवि श्रमणाचार्य 108 श्री विभवसागर जी महाराज

रजत रत्नत्रय महोत्सव

नियम = पहले, तीसरे में 5 6 7 वर्ण यगण
। ऽ ऽ यमाता
दूसरे, चौथे में 5 6 7 वर्ण जगण
। ऽ ऽ जहान

अंक विधि में छन्द नियम

1, 3	2, 4	चरण
5 6 7	5 6 7	वर्ण
1 2 2	1 2 1	मात्रा

य:	श्री: ।
ऽ	ऽ
सा,	गौ ।।
ऽ	ऽ

हे !,	हे! ।
ऽ	ऽ
हे !,	हे! ।।
ऽ	ऽ

1. चार चरण
2. 16–16 मात्रा
3. चरणान्त में दो दीर्घ (ऽऽ)
4. अन्त में अनुप्रास (तुक)
   दो दीर्घ + तुक

1. चार पंक्तियाँ
2. 14–14 मात्रा (प्रत्येक चरण में)
3. चरणांत में तुक मिलाना (अंत अनुप्रास)

गणनाम		उदाहरण		रचना
यगण		यमाता		। ऽ ऽ
मगण		मातारा		ऽ ऽ ऽ
तगण		ताराज		ऽ ऽ ।
रगण		राजभा		ऽ । ऽ
जगण		जभान		। ऽ ।
भगण		भानस		ऽ । ।
नगण		नसल		। । ।
सगण		सलगा:		। । ऽ
लघु		ल		।
गुरु		गा:		ऽ